Research Paper History

बौद्धकालीन चिकित्सा विज्ञान, एक अवलोकन
Bauddhakalin Chikitsa Vigyan, Ek Avalokan

Suraj Pratap | Research Scholar, Net & J.R.F., Srivenkateshwara University, Gajraula

ABSTRACT

बुद्धकाल में चिकित्सा विज्ञान अपनी उन्नति पर था, प्रकृति के महत्व को समझकर तत्कालीन विद्वानों ने प्राकृतिक चिकित्सा को ही अपनाया था उनका मानना था कि यदि प्रकृति रोग की जननी है तो उपाय भी प्रकृति से ही प्राप्त होगा। इसी कारण प्राकृतिक औषधियों का ज्ञान बढ़ाकर उनका उपयोग जनमानस हेतु लाया गया था। बुद्ध स्वंय को चिकित्सक कहते थे, चिकित्सा हेतु औषधियां पर्वतो, वनों, जलाशयों के किनारे प्राप्त की जाती थी।
प्राकृतिक चिकित्सा के कारण ही आयुर्वेद का महत्व बढ़ा जिससे चिकित्सा विज्ञान की उन्नति हुई थी। जिसका विवरण संस्कृत बौद्ध साहित्य तत्कालीन संस्कृत ग्रन्थों में उपलब्ध है।

KEYWORDS Buddha Chikista Vigyan

परिचय
बुद्धकाल में चिकित्सा को आयुर्वेद व प्राकृतिक चिकित्सा के नाम से जाना जाता था, अन्य विद्याओं के साथ ही आयुर्वेद का भी अध्ययन अध्यापन होता था।[1], बौद्ध साहित्य में चिकित्सक को भैषज्य[2], वैद्यक[3] कहा जाता था प्रसिद्ध और कुशल भैषजो को 'वैद्यराज''[4] और भैषज्य–राज[5] कहा जाता था। वैद्यराज अपने पास औषधियाँ रखते थे[6] वे रोगी के लक्षण (रोग–चिन्ह) देख कर दवा करना प्रारम्भ करते थे।[7] वे औषधियों के अतिरिक्त वैद्यों के उपदेश और आदेश के अनुसार ही पथ्य ग्रहण किया जाता था।[8] चिकित्सकों के अतिरिक्त परिचारकों की भी आवश्यकता होती थी।[9] रोगियों के सम्बन्धी एंव हितैषी उनके पास रहते हुए उनकी देख–रेख करते थे। चिकित्सा इतनी उन्नति पर थी कि आयुर्वेद की सहायता से काला कुरूप व्यक्ति भी औषधि सेवन कर सुन्दर सुरूपवान बन जाता था।[10]

बुद्ध का चिकित्सा सम्बन्ध : –
बुद्ध स्वंय में दार्शनिक चिकित्सक थे, एक छोटी सी कहानी जो की ओशो के प्रवचन से ली गई है, बुद्ध से किसी व्यक्ति ने पूंछा कि आप कौन हो? आप का परिचय क्या है? क्या आप दार्शनिक है, विचारक है, संत हैं, योगी या ज्ञाता या ईश्वर के दूत? '' भगवान बुद्ध ने कहा कि मैं सिर्फ एक चिकित्सक हूँ।''[11]

जिस प्रकार चिकित्सक को रोगी के स्वस्थ करने हेतु 4 तथ्यों (1) रोग (2) रोग का कारण (3) रोग का उपचार (4) भैषज्य (रोग दूर करने की दवा) की आवश्यकता है। उसी प्रकार बुद्ध भी कहते है – (1) अगर दुख है तो (रोग) (2) दुख के कारण भी होगें (कारण) (3) कारण है तो उसे दूर भी किया जा सकता है। (निदान, उपचार) (4) दूर करने का उपाय (दवा या अष्टांगिक मार्ग) बताया।

भगवान बुद्ध की '' भैषज्य गुरू'' के रूप में उपासना चीन, जापान तिब्बत आदि कई देशामें है। इस उपासना का प्रतिपादक सूत्र है : ''भैषज्य गुरू वैदूर्यप्रभराज सूत्र'' जिसका अनुवाद चीनी और तिब्बती भाषा में उपलब्ध है।[12] स्वंय बुद्ध को महावैद्य कहा गया है। जो पृथ्वी पर मानव को विभिन्न व्याधियों से मुक्त करने के लिए घूमते रहे।[13]

बुद्धकालीन चिकित्सक जीवक :–
मगधनरेश बिंबिसार का प्रसिद्ध राजवैद्य जीवक बुद्ध का अनुयायी था। इसका आयुर्वेद ज्ञान उच्च कोटि का था। तक्षशिला विश्वविद्यालय में इसने आयुर्वेद का अध्ययन किया तथा नगर के चतुर्दिक घूमकर औषधि के पौधों का ज्ञान प्राप्त किया था।[14] अंबवन बिहार राज्य के राजगृह के निकट स्थित एक आम्रोधान है। दीघनिकाय[15] के अनुसार बुद्ध अंबवन में कुछ समय के लिए ठहरे थे। अंबवन में उद्यान राजवैद्य जीवक का ही था। उज्जैनी के राजा चन्द्र प्रद्योत पीलिया बिमारी से ग्रस्त था। उसने सम्राट बिम्बिसार से अनुरोध किया कि कुछ दिनों के लिए वे जीवक को उज्जैन भेज दे। औषधियुक्त घी से जीवक ने उन्हें स्वस्थ कर दिया था।.... जीवक ने बुद्ध को भी कब्ज रोग से मुक्त किया था।[16] महावग्ग जातक (8.1.1–29) जीवक के विषय में व उनकी अभूतपूर्व चिकित्सा/शल्य चिकित्सा के विषय में वर्णन करता है तथा उसके गुरू ऋषि अत्रेय के विषय में भी बताता है जिनसे जीवक ने चिकित्सा पद्यति सीखी थी। वैद्यराज जीवक शल्य चिकित्सा में इतनें प्रवीण थे की मरी हुई स्त्री के पेट को शस्त्र से चीर कर बच्चे को निकाल लेना उनका शल्य कौशल था। [17]

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि भारतीय इतिहास के प्रारम्भिक युगों में शल्य व चिकित्सा विद्या अत्यन्त विकसित अवस्था में थी। जीवक के गुरू आत्रेय ऋषि को चिकित्सा शास्त्र का प्रणेता बताया गया है।[18]

रोग विवरण : –
बुद्धकाल में भी सभी रोग आजकल के समान ही थे। रोगों को उस काल में 4 भागों में बांटा गया था।

(1) वातिका (2) पैत्तिका (3) श्लेष्मिका और सन्निपात[19]

जिस प्रकार आजकल भी आयुर्वेद में त्रिदोष (वात, पित्त, कफ) को ही रोगो का मूल प्रकार माना जाता है उसी प्रकार उस युग में भी रोग त्रिदोष– वात, पित्त और कफ[20] के कारण उत्पन्न होते थे। भोजन की अधिकता से प्राणवायु और अपानवायु में रूकावट पड़ती थी, जिसके कारण आलस्य और निद्रा बढ़ जाती थी तथा शक्ति क्षीण होने लगती थी। [21] दन्त, ओष्ठ, नासिका और मुख रोगों की निम्न तालिका ''सदधर्म पुण्डरीक'' [22] नामक ग्रन्थ में दी गई है :–

दन्त रोग : – श्यामदन्त, विषमदन्त, पीतदन्त, दुःसस्थित दन्त, पतितदन्त, खण्डदन्त, वक्र दन्त
ओष्ठरोग : – लम्बोष्ठ, आभ्यन्तरोष्ठ, प्रसारितोष्ठ, खण्डोष्ठ, वकोष्ठ, कृष्णोष्ठ, वीभत्सोष्ठ[23]
नासिका रोग :– चिपिटनासा, वंकनासा [24]
मुखरोग : –दीर्घमुख, वंकमुख, कृष्णमुख और नाप्रियदर्शनामुख [25]

अन्य रोगों में क्रमशः कायरोग, पीतपांडु, कुष्ठरोग[26], वातातप [27], पाण्डुरोग[28],क्षयव रोग[29] इत्यादि का वर्णन मिलता है।

समाज में प्रचलित औषधियाँ :– रोग के प्रारम्भ होते ही चिकित्सा होना आवश्यक था, ना होने से रोग बढ़ जाता था और रोगी की मृत्यु हो जाती थी।[30] इसलिए चिकित्सा की उत्तरोत्तर वृद्धि होती गई।[31] प्रायः समाज में अल्प मूल्य वाली दवायें अधिक जनप्रिय थी। यथा एक स्त्री ने वैद्य से कहा कि '' मैं इसका उपस्थान करूँगी परन्तु आप अल्प मूल्य की दवा बतावें। [32]

त्रिफला :– बहुगुणकारण अल्पमूल्य वाली औषधियों में त्रिफला आज भी प्रसिद्ध है। बौद्धकाल में उसके काढे को प्रमेय के रोगी को दिया जाता था।[33] आमलकी (आंवला), हरीतकी (हड़) और विभीतकी (बहेड़ा) को ही त्रिफला कहा जाता था। अन्य रोगों के लिए भी औषधियों के तृण, पुष्प, मूल, आदि का प्रयोग औषधि रूप में होता था।[34]

सूदया :– इसे घी में पका कर पीने से बुद्धि और बल बढ़ता था। इस औषधि से प्यास और भूख नहीं बढ़ती थी।[35] यह औषधि हिमालय से लाई जाती थी।[36]

प्रभास्वरा :– यह पांच गुणों से सम्पन्न औषधि थी। (प्रभास्वरा नामौषधी पंचगुणोयेता [37])। इसके सेवन से शरीर में शस्त्र नहीं विध सकता था। अमनुष्य योनि में नहीं जाना पड़ता था, बल वीर्य क्षीण नहीं होता था, कान्ति की वृद्धि होती थी और दृष्टि तीव्र हो जाती थी। [38]

संजीवनी [39] :– इस औषधि से सर्प–विष को दूर किया जाता था।[40] औषधि के अतिरिक्त मन्त्र बल से भी विष कम किया जाता था। [41]

अमोघा :– नेत्र औषधि थी, जो आंख में लगाई जाती थी अथवा सिर में बांधी जाती थी। इस औषधि के प्रयोग से सम्मोहन–भ्रम नहीं उत्पन्न होता था। यह औषधि महापर्वत पर होती थी।[42]

शंखनाम :– यह औषधि भी आंख में लगाई जाती थी। तथा सिर में बांधी जाती थी। इससे धुंआ निकलता रहता था और रात्रि में प्रज्जवलित होती थी।[43]

नेत्र औषधि : – नेत्र रोगों की औषधियाँ भी उन्नत दशा में थी, जिनसे आजन्म अंधे

लोग भी नेत्र ज्योति को प्राप्त कर लेते थे। [44] फूलों को सूघकर भी नेत्र ज्योति प्राप्त की जाती थी। [45]

गोशीर्ष चन्दन : – यह दाह ज्वर की महा औषधि थी।[46] जिसके सेवन से रोगी स्वस्थ हो जाता था। [47] इसका मूल्य लाख सुवर्ण होता था।[48]

इक्षुरस :– यह क्षय रोग की उत्तम औषधि थी। [49]

गर्भधारण की औषधि :– उस समय बन्ध्यापन (बांझपन) भी दूर किया जा सकता था। भैषज्य गुटिका को पानी में मिलाकर पीने से पुत्रोत्पत्ति होती थी।[50]

प्रमत्तता की औषधि :– ऐसे आयुर्वेदिक पुष्प ज्ञात थे, जिनके सूघने से पागलपन तथा उन्माद दूर हो जाता था। [51]

बधिरता औषधि :– पुष्पों को सूघने से श्रवण शक्ति भी प्राप्त हो जाती थी।[52]

मंत्रोषधि :– मंत्रों द्वारा रोगों को दूर करने वाले को 'मंत्रोषधि परिचारक' कहते थे [53] कभी–कभी इससे रोग दूर नहीं भी होते थे। [54]

औषधि निर्माण : – औषधियों का निर्माण कोमल डंठलो, पौधों की शाखाओं पत्तों, फूलों, तृणों, गुल्मो, तथा वनस्पतियों से किया जाता था। [55]

औषधियाँ तीन प्रकार की वर्णसम्पन्न गन्ध सम्पन्न और रस सम्पन्न [56] होती थी। जिन्हें ही महाऔषधि (महाभेषज्य)[57] कहा गया है।

औषधि प्राप्ति स्थान :–
(1) पर्वतों से – हिमालय पर्वत पर प्राप्त होने वाली 4 प्रकार की औषधियां बताई गयी है।[58]

सर्व वर्ण रस स्थाननुगता, सर्व व्याधि प्रमोचनी नाम्।
सर्व विष विनाशनी नाम् यथा स्थान स्थित सुखप्रदानाम्।। [59]

(2) उगाकर : औषधियाँ बनाने के लिए तृण और पुष्प [60] तथा मूल उगाई भी जाती थी। [61] औषधि सम्बन्धी जड़ों और बीजों को उगाकर उन्हें बढ़ाया जाता था [62]

(3) वन :– वनो से प्राप्त औषधियों को ''तृणवन औषधि'' [63] कहते थे।

निष्कर्ष : –
उपर्युक्त विवरण से हमें ज्ञात होता है कि बुद्धकालीन चिकित्सा विज्ञान अपने औषधीय ज्ञान में उच्च स्थिति में था। आज की आवश्यकता है कि जिस प्रकार उस प्राचीन ज्ञान का सहारा चीन, जापान, कोरिया, अमेरिका, जैसे देश ले रहे है वही हमारे देश में वह ज्ञान ग्रन्थों में बंद पड़ा है। यथा हिमालय, उत्तराखण्ड, हिमालय में मिलने वाली कीड़ा जड़ी [64] जिसे तिब्बत में 'यारसागुम्बा' कहते है जिसकी अतर्राष्ट्रीय मार्केट में कीमत 60 लाख रूपये प्रतिकिलो है। (वियाग्रा बनाने में) की जानकारी तक भारतीय लोगों को नहीं है इसके जैसी अनेक औषधीय सम्पदा भारत में भरी पड़ी है जिसका उद्घाटन करना इतिहासविदो व आयुर्वेद चिकित्सको का कर्त्तव्य होना चाहिए तभी प्राचीन ज्ञान सुरक्षित बचा रह पायेगा

REFERENCES

1. दिव्यावदान 328/9 2. अवदान शतक जिल्द 1/313/2 : दिव्यावदान 212/19, 353/3 3. अवदान शतक जिल्द 2/85/18 4. मित्रा, राजेन्द्रलाल, ललित विस्तर (एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल, कलकत्ता 1877), 4/3, 448/17 : अवदान जिल्द 1/32/7, 2/134/8 5. राय शरतचन्द्र दास बहादुर तथा शरतचन्द्र शास्त्री, करूणा पुण्डरीक 69/25 (बुद्धिस्ट टेक्सट सोसाइटी, कलकत्ता 1898) : सदधर्म पुण्डरीक 148/2, 6, 8, 9, 11 6. लीफमैन, ललितविस्तर 75/4 7. अवदान शतक जिल्द 1/29/5–6 8. अवदान शतक जिल्द 2/85/18 9. वही, जिल्द 2/167/3, 167/9, 11 10. महावस्तु0 जिल्द 2/492/5–18 11. ओशो, मेडीकेशन दू मेडीटेशन पृ0 सं0 15 (ओशो फ्राम द ब्लागः माइन्ड ओरियेन्टेड डिसीसेज) 12. Preachingsofbuddha.blogspot.in/2013/06/blog_post16.html 13. मित्रा, राजेन्द्रलाल, ललितविस्तर 466/12–13(ऐशियाटिक सोसाइटी आफ बंगाल, कलकत्ता 1877) 14. दीक्षा की भारतीय परम्पराएं (हिन्दी), पृ0 87 15. दीघ निकाय 1, 47, 49 16. https://hi.wikipedia.org./wiki/ जीवक 17. अवदान शतक जिल्द 1/134/8–9 18. बुद्धचरित 1/43 19. सद्धर्म 95/27–28 20. सौन्दरनन्द 16/6921. वही, 14/2 22. सदधर्म पुण्डरीक 229/25–27 23. वही, 229/27 से 230/1 तक 24. वही, 230 /1–2 25. वही, 230/2–3 26. सौन्दरनन्द 9/44 27. अवदान शतक जिल्द 1/119/7 28. वही, जिल्द 1/169/12 29. वही, जिल्द 1/244/8–9 30. लीफमैन, ललितविस्तर 74/21 31. सुखावती 69/5 32. दिव्यावदान 15/17–18 33. चरकसंहिता 23/10–12 34. करूणा पुण्डरीक 111/23 : लीफमैन, ललितविस्तर 75/20 : सुखावती व्यूह 69/3–4 35. दिव्यावदान 296/23–24 36. वही, 296/22–23 37. दिव्यावदान 71/7 38. वही, 71/7–9 39. वही, 67/15 40. वही, 67/16–17 41. वही, 65/21–22 42. वही, 64/6–8 43. वही, 65/19–20 44. सदधर्म पुण्डरीक 96/1045. करूणा पुण्डरीक 94/23–24, 99/12 46. दिव्यावदान 19/9 47. वही, 19/16 48. वही, 19/16 49. अवदान शतक जिल्द 1/244/8/9 50. महावस्तु जिल्द 2/431/16, 17, 432/2–15 : दिव्यादान 15/15–16 51. करूणा पुण्डरीक 95/26–27 52. वही, 94/24 53. अवदान शतक जिल्द 1/167/3 54. वही, जिल्द 1/167/3–4 55. सद्धर्म पुण्डरीक 89/17–18 56. वही, 209/22–23 57. वही, 209/22 58. सद्धर्म पुण्डरीक 95/30 59. वही, 96/1–2 60. लीफमैन, ललितविस्तर 75/20 : सुखावती 69/3–4, 14–15 61. सुखावती 72/12 : वज्रच्छेदिका 22/20 62. मित्रा, ललितविस्तर 450/3 63. लीफमैन, ललितविस्तर 157/7 64- www.bhaskar.com/news/c-3-1115954_ch0491_NOR.html?seq=1